अध्याय – 3

शिक्षा और महिला सशक्तिकरण
(Education and women Empowerment)

शिक्षा का –

प्रश्न : "महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा आवश्यक है।" इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर :– शिक्षा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के 'शिक्षा' धातु से हुआ है, जिसका शाब्दिक अर्थ सीखना और सिखाना है। शिक्षा को अंग्रेजी भाषा में Education कहते है, जो लैटिन भाषा के Educatum शब्द से प्राप्त हुआ है। Educatum शब्द 'E' और 'Duco' से मिलकर बना है। 'E' शब्द का अर्थ 'अन्दर से' और 'Duco' शब्द का अर्थ, बालक की की अन्तर्निहित गुणों एवं शक्तियों बाहर निकालना तथा उसे सम्पूर्ण रूप से विकसित करना।

कुछ विद्वानों ने शिक्षा का अर्थ बताया है :–

प्लेटो (plato) के अनुसार, "शिक्षा से मेरा अभिप्राय उस प्रशिक्षण से है जो अच्छी आदतों द्वारा बालक में नैतिकता का विकास करता है।"

अरस्तु (Aristotle) के अनुसार :– "शिक्षा स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण करती है।"

PAGE NO :
DATE :

वेदों में महिलाएं को ज्ञान की उपदेशजी कहा जाता था। इससे सिद्ध होता है कि वैदिक काल में कुछ महिलाएं शिक्षा देने का कार्य करती थी।

महिला शिक्षा के महत्व में कुछ विद्वानों ने अपनी कथन दी है, जो इस प्रकार हैं:-

गाँधी जी :-
मेरा दृढ विश्वास है कि महिलाओं को वे सभी सुविधाएं प्राप्त होनी चाहिए जो पुरुषों को प्राप्त हैं बल्कि विशेष परिस्थितियों में उन्हें अतिरिक्त - ले - आर्थिक सुविधाएँ प्रदान की जाये। शिशु की प्रथम गुरु उसकी माता होती है। वह उसी से पहले ज्ञान प्राप्त करता है।

जवाहरलाल नेहरु :-
"एक बालक की शिक्षा से एक व्यक्ति शिक्षित होता है परन्तु एक बालिका को शिक्षित करने से पूरा परिवार शिक्षित होता है।

स्वामी विवेकानन्द :-
स्त्रियों को यदि तरक्की करने का मौका नहीं दिया गया तो तुम तरक्की नहीं कर सकोगे।

कोठारी कमीशन (1964) :-

ने कहा कि मानव संसाधन के पूर्ण विकास के लिए शिशु काल में महिला शिक्षा का महत्व पुरुषों की शिक्षा से कहीं अधिक है।

महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा
(Education for Women Empowerment)

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते
रमन्ते तत्र देवता"।

जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं।

महिला सशक्तिकरण :-

अपनी निजी स्वतंत्रता और स्वयं के फैसले लेने के लिए महिलाओं को अधिकार देना ही महिला सशक्तिकरण है। परिवार और समाज की हदों को पीछे छोड़ने के द्वारा फैसले, अधिकार, विचार, दिमाग आदि सभी पहलुओं से महिलाओं को अधिकार देना उन्हें स्वतंत्र बनाने के लिए है। समाज में सभी क्षेत्रों में पुरुष और महिला दोनों को बराबरी में लाना होगा। देश, समाज और परिवार के उज्ज्वल भविष्य के लिये महिलायें

सशक्तिकरण जरूरी है। महिलाओं को स्वच्छ और उपयुक्त पर्यावरण की जरूरत है, जिससे कि व हर क्षेत्र में अपना खुद का फैसला ले सके चाहे वो स्वयं देश, परिवार या समाज किसी के लिए भी हो। देश को पूरी तरह से विकसित बनाने या विकास के लक्ष्य को पाने के लिए एक जरूरी हथियार के रूप में है महिला सशक्तिकरण है।

भारतीय संविधान के प्रावधान के अनुसार पुरुषों की तरह सभी क्षेत्रों में महिलाओं को बराबर अधिकार देने के लिए कानूनी स्थिति है। भारत में बच्चों और महिलाओं के उचित विकास के लिए इस क्षेत्र में महिला और बाल विकास विभाग अच्छे कार्य कर रहा है।

महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा:-

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते,
रमन्ते तत्र देवता'।

जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं।
प्राचीन काल में महिलाओं पर हर तरह के अत्याचार किये जाते हैं। महिला को पुरुषों के बराबर शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार भी नहीं मिलती। ~~इसलिये~~ महिलाओं का घर, लड़की, सन्तान का पालन-पोषण, परिवार का देख-रेख, सेवा करने तक ही सीमित रखा जाता था, उनकी मनचाहे कोई कार्य करने

का अधिकार नहीं था। यही प्रथा प्रचलित था। भोगोपभोग से दूर रखा जाता था परन्तु 21वीं सदी के भारत में ऐसा नहीं है। शिक्षा से प्रभावित होकर लोग महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त करने का अवसर दिया।

आधुनिक युग में समाज में में पुरुष तथा महिला को एक गाड़ी के दो पहिए माना गया है। यदि एक भी पहिए में गड़बड़ी होने से गाड़ी को चलाना मुश्किल हो जाता है इसी प्रकार स्त्री या पुरुष किसी को भी हटा देने से सांसारिक गाड़ी को यानि परिवार को अच्छे से चलाना मुश्किल पड़ जायेगा। समाज के युग में महिलाएँ पुरुषों के कंधों से कंधा मिलाकर चल रही है। इतना ही नहीं हर क्षेत्र में महिलाएँ कार्य कर रही हैं अपना अधिकार के लिए लड़ रही है। संविधान के अनुच्छेद 15 में लिंगभेद के आधार पर पुरुषों व महिलाओं में विभेद करने को प्रतिबंधित किया गया है वहीं महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने का प्रयत्न किया गया है। आज पूरे विश्व की महिलाएँ अपने अधिकारों के प्रति उत्सुक हैं। वे अपनी बौद्धिक योग्यता, तकनीकी, सामर्थ्य एवं तार्किक विवेक से पुरुषों को ~~चमत्कृत~~ पीछे छोड़ रही हैं। पुत्री, पत्नी, माता के रूप में अपनी पारिवारिक दायित्वों के सम्यक निर्वहन के साथ-साथ वे मानव

कल्याण की दिशा में अपना योगदान दे रहे हैं।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में महिला सशक्तिकरण :
(Women Empowerment in Historical Content)

वैदिक काल में महिलाओं की सामाजिक स्थिति पुरुषों के समान ही थी परन्तु उत्तर-वैदिक काल में महिलाओं की गरिमा में कमी आई थी। वैदिक काल में घोषा, गार्गी, मैत्रेयी, कात्यायी, शकुन्तला अनेक महिलाएँ थी जिनको पुरुषों के समान शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था।

एस. मुखर्जी

"यह सम्भव है कि इस युग में स्त्रियों की शिक्षा के लिए कोई संगठित व्यवस्था नहीं थी किन्तु इस विषय में हमारे पास कोई निश्चित प्रमाण नहीं है।"

वैदिक काल के अन्तिम चरण में लगभग 200 ई०पू० बालिकाओं के विवाह की आयु को कम करके उनकी शिक्षा-प्राप्ति के मार्ग में अवरोध उपस्थित कर दिया गया। परन्तु महात्मा गाँधी ने स्त्रियों को संघ में प्रवेश करने की आज्ञा देकर, उनकी शिक्षा को नव-जीवन प्रदान किया।

ए. एस. अल्तेकर के अनुसार:

स्त्रियों को संघ प्रवेश किया करने की आज्ञा ने भी शिक्षा को पर्याप्त प्रोत्साहन प्रदान किया।

गौतम बुद्ध के समय महिलाओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण कुछ सन्तुलित हुआ लेकिन मध्यकाल में उसमें पुनः ह्रास होने लगा। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन काल के प्रारम्भ में महिलाएँ लगभग उपेक्षित रही जबकि मिशनरियों ने समता, स्वतंत्रता व बन्धुता के एक नये युग की शुरुआत करते हुए महिलाओं की दशा को एक नई दिशा देने का प्रयत्न किया। निःसंदेह उन्नीसवीं तथा बीसवीं शताब्दी को भारत के सामाजिक सांस्कृतिक पुनरुत्थान का काल स्वीकार किया जा सकता है। इस समय में आई सामाजिक जागृति ने अनेक कुरीतियों को दूर करके सुधारों की एक श्रृंखला रूपी आंदोलन को प्रोत्साहित किया। महिला कल्याण व सशक्तिकरण के प्रयत्नों की ओर भी अनेक समाज सुधारकों का पर्याप्त ध्यान गया एवं इन्होंने सामाजिक सांस्कृतिक सुधार तथा शिक्षा के माध्यम से महिलाओं व पुरुषों के मध्य अन्तर को समाप्त करने की जरूरत पर जोर दिया गया एवं इस कार्य में शिक्षा की सहायता लेने की प्रबल संस्तुति की गई।

शिक्षा की भूमिका
(Role of Education)

महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता व मार्ग की बाधाओं को दूर करने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए उन्हें शिक्षित करना जरूरी है। बालक-बालिकाओं के प्रारंभिक विकास

में शालाओं के अतुलनीय योगदान है। शिक्षित समाज व विकासोन्मुख राष्ट्र निर्माण हेतु महिलाओं का शिक्षित होना आवश्यक है। स्त्री समाज का आधार है उसे शिक्षित करके सम्पूर्ण समाज को शिक्षित करना है। नेपोलियन ने कहा था –

" मुझे सुशिक्षित माताएँ दो, मैं एक सुशिक्षित राष्ट्र का निर्माण कर दूँगा।

स्त्री के विषय में एक कहावत है :

" जो हाथ पालने को झुलाता है, वह संसार का शासन भी करता है।"

शिक्षित महिलाएँ ही अपने कर्तव्यों को अच्छे तरीके से निर्वहन कर सकती है तथा अपने अधिकारों को समझ बूझकर लाभ उठा सकती है। शिक्षा के अभाव के कारण महिलाए अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों को नहीं समझ पाती है। यदि इन्हें इनकी जानकारी भी मिल जाती तो सरकारी नियमों के असहयोग तथा समाज के नकारात्मक दृष्टिकोण के कारण उनका व्यावहारिक रूप से उपयोग नहीं हो पाती।

महिला आयोगों में वृद्धि, लड़कियों के प्राथमिक शिक्षा का सार्वजनीकरण, लड़कियों के शाला त्याग पर अंकुश तथा कन्या शिक्षा को विशेष प्रोत्साहन देने जैसे उपाय करने की आवश्यकता है।

B.ed - II[nd] YEAR

2018 - 2020

[C - 8]

* शिक्षा दर्शन की परिभाषा ⇒

1) रसेल के अनुसार ⇒ " अन्य विद्याओं के अनुसार व समान दर्शन का मुख्य उद्देश्य ज्ञान की प्राप्ति है "।

2) R.W. सैलर्स के अनुसार ⇒ दर्शन एक व्यवस्थित विचार द्वारा विश्व और मनुष्य की प्रकृति के विषय में ज्ञान प्राप्ति करने का निरन्तर प्रयास है।

3) हरबर्ट स्पेन्सर के अनुसार ⇒ " दर्शन एक सार्वभौमिक विज्ञान के रूप में प्रत्येक से सम्बन्धित है "।

4) A.S ब्राइटमैन के अनुसार ⇒ दर्शन अनिवार्यतः अनुभव को जानने की एक विधि है। यह अनुभवों के विषय में परिणामों का व्यवस्थित ज्ञान समूह नही है।

5) अरस्तु के अनुसार ⇒ दर्शन वह विज्ञान है जो परम तत्व के यथार्थ स्वरूप की जाँच करता है।

6) फिक्टे के अनुसार ⇒ " दर्शन ज्ञान का विज्ञान है "।

7) ब्राइटमैन के अनुसार ⇒ " दर्शनशास्त्र को एक ऐसे प्रयास के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसके द्वारा मानव - अनुभूतियों के संबंध में समग्र रूप से सत्यता से विचार किया जाता है अथवा जो सम्पूर्ण अनुभूतियो को बोधगम्य बनाता है।

8) डा० राधाकृष्णन के अनुसार ⇒ दर्शन वास्तविकता के स्वरूप का तार्किक चिन्तन है "।

* शिक्षा और दर्शनशास्त्र में संबंध → दर्शन तथा शिक्षा का घनिष्ठ संबंध ही नहीं अपितु दोनों एक-दूसरे पर आश्रित भी हैं। जिसके कारण शिक्षा दर्शन पर आश्रित रहती है तथा दर्शन को शिक्षा का सहारा लेना पड़ता है। उन तथ्यों पर निम्नलिखित रूप प्रकाश डाला जा सकता है —

1] शिक्षा लक्ष्य को प्राप्त करने का एक साधन है →
2] दर्शन जीवन के उस वास्तविक लक्ष्य को निर्धारित करता है जिसे शिक्षा को प्राप्त करना है।
3] दर्शन शिक्षा के विभिन्न अंगों को प्रभावित करता है।
4] शिक्षा दर्शन का गत्यात्मक साधन है।
5] महान दार्शनिक महान शिक्षाशास्त्रि भी हुए हैं।

20/05/2020

सर्वशिक्षा अभियान को सुदृढ़ बनाने के लिए सुझाव

(1) शिक्षकों को वांछित सुविधाएँ उपलब्ध कराना।
(2) निःशुल्क पुस्तकों एवं अन्य सहायता प्रदान कराना।
(3) दोपहर के भोजन की व्यवस्था कराना।
(4) अनुदान राशि का लेखा-जोखा शिक्षक पर न छोड़कर ब्लाक समिति के किसी विशिष्ट कार्यकर्ता को सौंपना।
(5) सेवारत-काल में शिक्षकों को आधुनिकतम सुधारों तथा विकास सम्बन्धी प्रशिक्षण देना।
(6) पूर्व-सेवाकाल प्रशिक्षण में समय-समय पर परिवर्तन करना।
(7) ग्रामीण विकास शिक्षा समिति में सुधार करना।
(8) सर्वशिक्षा अभियान सम्बन्धी जागरूकता उत्पन्न करना।
(9) ब्लाक रिसोर्स तथा कलस्टर रिसोर्स केन्द्रों को उनको उत्तरदायित्व के प्रति जिम्मेदार बनाना।
(10) सर्वशिक्षा अभियान एक शैक्षिक कार्यक्रम है। इसे राजनीतिक तथा कूटनीतिक सम्बन्धों का अखाड़ा बनने से रोकना।
(11) पंचायती राज संस्थाओं तथा ग्रामीण शिक्षा समिति में सामंजस्य स्थापित करना।
(12) शिक्षण सम्बन्धी सामग्रियों का निःशुल्क वितरण।

उपर्युक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखकर सर्वशिक्षा अभियान को सुदृढ़ बनाया जा सकता है। जिससे यह अपने दायित्वों को पूर्ण कर सके। इसके लिए अच्छे, ईमानदार तथा वचनबद्ध शिक्षकों को इसकी जिम्मेदारी सौंपी जाए।

राष्ट्रीय विकलांग जन-नीति - 2006

इस नीति का उद्देश्य संवैधानिक उद्देश्यों जैसे- स्वतन्त्रता, व्याप, समानता की पूर्ति करना है। इसका पुनर्गठन 2003 में मीरा कुमार द्वारा किया गया। इस नीति के प्रावधान निम्न हैं —

(1) भारत सरकार विकलांग छात्रों को स्कूल स्तर के बाद अध्ययन करने के लिए छात्रवृत्तियाँ प्रदान करना।

(2) विकलांग व्यक्तियों को उच्च व व्यावसायिक शिक्षा हेतु विश्वविद्यालय तकनीकी संस्थाओं तथा उच्च शिक्षा की अन्य संस्थाओं में अनेक सुविधाएँ प्रदान करना।

(3) विकलांग व्यक्तियों में कौशल विकास बढ़ाने के लिए तकनीकी तथा व्यावसायिक शिक्षा की सुविधाओं को प्रोत्साहित करना।

(4) विकलांग व्यक्तियों के लिए शिक्षकों और पुस्तकों, स्टेशनरी, वर्दी, परिवहन हॉस्टल भत्ता, अनुदेशन सामग्री या उत्पादन सामान्य शिक्षकों का प्रशिक्षण आदि विभिन्न सुविधाओं के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

(5) विकलांग बच्चों की पहचान, सम्मिलित स्कूलों में इनका दाखिला तथा इनकी शिक्षा जारी रखने के लिए सरकार की ओर से नियमित सर्वेक्षणों द्वारा सफल प्रयास करना।

(6) विकलांग महिलाओं की विशेष जरूरतों का ध्यान रखते हुए उनके लिए शिक्षा, रोजगार तथा अन्य पुनर्वास सेवाएँ प्रदान करने हेतु विशेष कार्यक्रम बनाये गये हैं। विकलांग महिलाओं के लिए विशेष शैक्षिक एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण सुविधाओं की व्यवस्था की जाती है।

(7) सामाजिक तथा आर्थिक विकास के लिए शिक्षा को उपयोगी बनाना।

स्वतन्त्र भारत में स्त्री शिक्षा हेतु किये गये प्रयास

(1) राष्ट्रीय स्त्री शिक्षा समिति 1958 - श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख की अध्यक्षता में इसका गठन किया गया। इसका मुख्य कार्य स्त्री शिक्षा की विभिन्न समस्याओं का समाधान करने के लिए अपने सुझाव प्रस्तुत करना था।

(2) भक्तवत्सलम कमेटी रिपोर्ट - 1963 -

(A) 6 से 14 वर्ष के सभी लड़के - लड़कियों के लिए अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था।

(B) लड़कियों के लिए अलग स्कूल तथा हॉस्टल की सुविधा

(C) महिलाओं के लिए अलग व्यावसायिक शिक्षा की व्यवस्था।

(D) अलग महिला महाविद्यालय तथा छात्रवृत्ति की व्यवस्था।

(3) कोठारी आयोग (14 July - 1964)

(A) बालिकाओं की प्राथमिक शिक्षा का अधिक से अधिक विस्तार करके बालक - बालिकाओं का अनुपात माध्यमिक स्तर पर 1:3 तथा उच्चतर स्तर पर 1:2 हो जाये।

(B) पृथक विद्यालय तथा छात्रावासों और छात्रवृत्ति की व्यवस्था।

(C) गृह विज्ञान तथा सामाजिक कार्य जैसे विषयों को बढ़ावा देना।

(4) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986

(A) महिला समाख्या योजना का विस्तार

(B) कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय योजना - 2004

(C) सर्वशिक्षा अभियान योजना

C-11

Unit-2

पर्यावरण - अर्थ, प्रकृति एवं घटक

पर्यावरण = पर्यावरण का अर्थ बहुत ही व्यापक है इसमें भूमण्डल जलमण्डल, वायुमण्डल को सम्मिलित किया गया है शब्दकोश में पर्यावरण में चारों ओर की उन सभी परिस्थितियों को सम्मिलित करते हैं जो पशुओं जीवों पौधों तथा वनस्पतियों के विकास रहन-सहन तथा कार्य करने की परिस्थितियों को प्रभावित करती है।

अर्थात - पर्यावरण वह है जो हमें चारो ओर से घेरे हुए है अतः पर्यावरण को समझने के लिए मनुष्य के चारो ओर के भौतिक वातावरण, जीव-धारियों तथा पौधों को समझना होगा। पर्यावरण में सभी भौतिक जैविक प्राणी सम्मिलित किया जाता है।

शाब्दिक रूप से में पर्यावरण दो शब्दों के मेल से बना है परि + आवरण। परि का अर्थ है 'चारो ओर' आवरण का अर्थ है 'घेरे हुए' अर्थात हमारे चारों ओर का वातावरण जिसके सभी सजीव निर्जीव पदार्थ अंग है। पर्यावरण की उत्पत्ति फ्रांसीसी शब्द Environer से हुई है जिसका अर्थ है समस्त परिस्थिति तथा प्रवृत्ति है पृथ्वी पर विद्यमान जैविक तथा अजैविक घटक मिलकर पर्यावरण का निर्माण करते हैं।

पर्यावरण की परिभाषा :-

वॉरिंग के अनुसार :- "एक व्यक्ति के पर्यावरण में वह सबकुछ सम्मिलित किया जाता है जो उसके जन्म से मृत्यु तक प्रभावित करता है"।

आन्सटैसी के अनुसार :→ "व्यक्ति के वंशानुक्रम में अतिरिक्त वह एवं कुछ पर्यावरण माना जाता है जो उसे प्रभावित करता है"

हॉलैण्ड तथा डगलस के अनुसार :- "जीव जगत में प्राणियों के विकास, परिपक्वता, प्रकृति, व्यवहार तथा जीवन शैली को प्रभावित करने वाला वाह्य समस्त शक्तियाँ परिस्थितियाँ तथा घटना को पर्यावरण में सम्मिलित किया जाता है और उन्ही की सहायता से पर्यावरण का अध्ययन किया जाता है"

सी० सी० पार्क के अनुसार :→

"मनुष्य का एक विशेष स्थान पर विशेष समय पर जिन सम्पूर्ण परिस्थितियों से घिरा हुआ है उसे पर्यावरण कहते हैं

पर्यावरण की प्रकृति :-

पर्यावरण के प्रकृति के अन्तर्गत विविध प्रकार की शक्तियाँ जैसे - भौतिक, सामाजिक, मानसिक, नैतिक सांस्कृतिक आर्थिक, राजनैतिक एवं भावात्मक शक्तियों को सम्मिलित किया जाता है। पर्यावरण इन सम्पूर्ण शक्तियों एवं परिस्थितियों का योग है जो जीवन प्रकृति व्यवहार विकास, जीवन प्राणियों की परिपक्वता को प्रभावित करते हैं।

मानसिक पर्यावरण से तात्पर्य उस आवश्यक वातावरण से है जो व्यक्ति का मानसिक विकास करता है सभी सहायक घटक जो मानसिक विकास मे सहायक होते है, उसे मानसिक पर्यावरण की सेवा दी जाती है इस प्रकार विद्यालय मे मानसिक पर्यावरण मे पुस्तकालय प्रयोगशाला, सहायक सामग्री तथा पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है यदि इनकी व्यवस्था समुचित ढंग से विद्यालय में की जाए तब बालक के मानसिक विकास मे अपेक्षित परिवर्तन लाया जा सकता है।

मानवीय पर्यावरण के अन्तर्गत प्राकृतिक सामाजिक तथा सांस्कृतिक पर्यावरण को सम्मिलित किया गया है मनुष्य का कर्य पर्यावरण में गुणवत्ता लाना है क्योंकि पर्यावरण मे प्रदुषण का प्रभाव बढ़ता जा रहा है इस प्रदुषण के अनेक कारण है जैसे- प्राकृतिक स्रोत का अधिक उपयोग, जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिकरण नगरीकरण तथा व्यक्तियों की प्रवृत्ति दोषपूर्ण होना, संसाधनों का अत्याधिक दोहन आदि है।

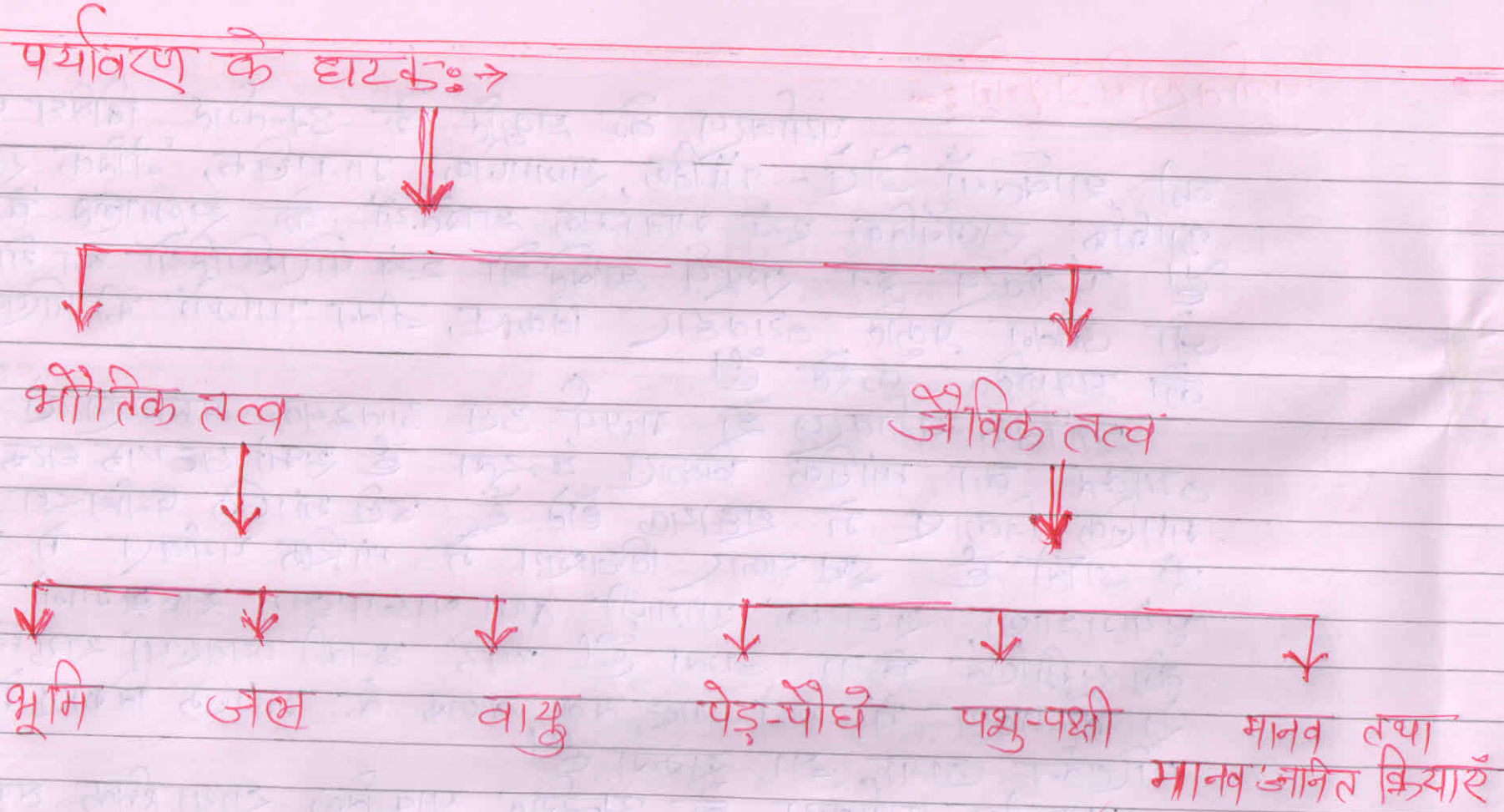

पर्यावरण के घटक :→

- भौतिक तत्व
  - भूमि
  - जल
  - वायु
- जैविक तत्व
  - पेड़-पौधे
  - पशु-पक्षी
  - मानव तथा मानव जनित क्रियाएँ

20-5-20